Shiv Shakti International Journal of Multidisciplinary and Academic Research
ISSN: 2278-5973 (Online) | Vol. 13, No. 4, (July 2025)
https://doi.org/10.5281/zenodo.15846894

वैश्वीकरण के दौर में साहित्य में चित्रित परिवर्तित होता पारिवारिक ढांचा

रीना

पी. एच. डी. शोधार्थी, हिन्दी विभाग, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई।

आज हिंदी भाषा और उसका साहित्य विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित हो चुका है। इसके विश्व रूप के निर्माण में हिंदी राज्यों के अतिरिक्त हिंदीतर राज्यों जिनमे तमिल, केरल, आंध्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात, बंगाल और साथ ही प्रवासी भारतीयों ने हिंदी को विश्व स्तर तक पहुंचाने में अपना अवर्णीय योगदान दिया है। वैश्वीकरण के कारण हिंदी साहित्य में विषयों का दायरा भी अधिक व्यापक हुआ है। पहले साहित्य जहां गांवों, किसान तथा भारतीय सामाजिक मुद्दों पर अधिक ध्यान देता था अब इसमें वैश्विक संस्कृति, राजनीतिक पक्ष , आर्थिक उदारीकरण तथा धार्मिक पक्ष के रूप में अधिक विस्तारित हो गया है। इस पक्ष की दृष्टि में रखते हुए अमित कुमार सिंह वैश्वीकरण पर अपना विचार प्रस्तुत करते हुए कहते है कि "भूमंडलीकरण ने भारत में समाज व संस्कृति के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है इन परिवर्तनों में कभी भविष्य के खतरे की आहट सुनाई देती है तो कभी इसमें एक नए भविष्य के गढ़ने का सुखद अहसास परिलक्षित होता है । बहरहाल, तेजी से हो रहे सभी सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तनों का विश्लेषण भारत में भूमंडलीकरण के सामाजिक व सांस्कृतिक प्रभाव के अध्ययन के लिए आवश्यक हो जाता है।"[1] वैश्वीकरण के प्रभाव से हिंदी साहित्य में आधुनिकता और परंपरा के बीच एक प्रकार का द्वंद तथा समन्वय दोनों ही पक्ष परिलक्षित हो रहे है। एक और साहित्य में वैश्वीकरण की वृद्धि के कारण जहाँ संबंधों में परिवर्तन आया है तो वही पारंपरिक मूल्यों एवं संस्कृति की जड़ों में भी परिवर्तन देखा गया है। इस वैश्वीकरण ने पारिवारिक संरचना और इसमें समाहित रिश्तों पर गहरा प्रभाव डाला है जैसे-जैसे परिवार के सदस्य वैश्विक स्तर पर जुड़ रहे है वैसे-वैसे पारिवारिक सदस्यों की परंपरागत एव भावनात्मक स्तर पर उनकी भूमिकाए भी बदलने लगी है। इसके पीछे मुख्यत: परिवार की संरचना में बदलाव, स्त्री एवं प्ररुष की भूमिकाओं में परिवर्तन, पीढ़ियों के बीच का अविश्वनीय अंतराल, नैतिक मूल्यों ने बदलाव, समय की कमी, पारिवारिक सदस्यों में तनाव, युवाओं का विदेश गमन और वृद्धों का अकेलापन आदि स्थितियों को इस परिवर्तन के कारणों के रूप में देखा जा सकता है। वैश्वीकरण के कारण बढ़ते युवाओ के प्रवास को भी बहुत बड़े पारिवारिक परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है जिसका सबसे अधिक प्रभाव वृद्ध लोगों पर पड़ा है। वृद्धावस्था में व्यक्ति अपनी जिंदगी के सुनहरे पन्नो को पलटते है उनके प्रत्येक पन्ने पर परिवार की खुशी, दुख और साथ बिताए गए प्रत्येक लम्हों की कहानी लिखी होती है। इन पन्नों में वह मिठास होती है जो एक समय के बाद वृद्धों के जीवन को सुखद रूप प्रदान करती है। वृद्धावस्था की स्थिति वैश्वीकरण के दौर में बहुत हद तक परिवर्तित हुई है। आज का वृद्ध व्यक्ति नीरस एवं अकेलापन झेल रहा है । प्रयास शुक्ल के शब्दों में "आज साहित्य में उन

Corresponding Author: Reena Sindhu, reenasindhu1111@gmail.com

कृतियो की कमी नहीं है जिनके केंद्र में वे बुजुर्ग स्त्री-पुरुष है, जिनकी संताने प्रदेश चली गई है या वही बस गई है और वे अकेले या दुकेलेपन (पति-पत्नी) में भी अकेले ही है या कहे एक बुजुर्ग दंपति अकेलेपन का दंश झेल रहे है... जहाँ यह समस्या एक आयामी नहीं रह जाती, वह कई आयामों को प्रकट करने लगती है ।"[2] ये सभी विषय बदलते हुए पारिवारिक परिवर्तन को मजबूती से यथार्थ रूप में प्रकट करते है। हिन्दी कथा साहित्य में परिवर्तित होते पारिवारिक सम्बन्धो को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत तो किया ही है तथा साथ ही आदर्शवाद की जगह यथार्थवाद को प्रमुखता से स्थापित किया गया।

वैश्वीकरण के तेजी से बदलते युग में जहाँ नई परम्पराएँ बन रही है । वही पुरानी परम्पराओं को व्यर्थ समझ कर छोड़ा जा रहा है। एक राष्ट्र की परम्परा दूसरे राष्ट्र द्वारा अपनाई जा रही है तथा स्वंय की परम्पराएं छोड़ी जा रही है । ऐसा करना सामाजिक ढांचे की मजबूती तो है तथा साथ ही कमजोरी का कारण भी बन रहा है जिससे परिवार के रिश्ते अपनी जड़ों को भूल रहे है । क्षमा शर्मा की कहानी 'दादी माँ का बटुआ' में पारिवारिक परम्पराओं को बचाने का प्रयास किया गया है। "आज हम चारों ओर नई तकनीक, कम्प्यूटर क्रांति, सेटेलाइट माइक्रोवेव, मोबाईल, ई-मेल, इंटरनेट, माइक्रोसर्जरी, जीन इंजीनियरिंग और न जाने क्या क्या सुन रहे है लेकिन अच्छी बात तो वह जिसमे हमारा खर्च भी कम और काम भी हो जाए। तभी हम अपनी प्राचीन परम्परायों को जीवित रख सकते है परम्पराएँ बचेगी तभी हम बचेंगे । यू नो,नो,वन इज रूटलैम, आखिर कोई पेड़ बिना जड़ जीवित नहीं रह सकता।"[3] परिवार भी एक वृक्ष के समान है जहां परंपराएं उसकी जड़ अर्थात मूल है और टहनियां आज भी युवा पीढ़ी और फूल पत्तियों आने वाली नई पीढ़ी है इस समाज शर्मा ने प्रमुखता से अपनी अन्य कहानियों में भी उबारा है । हिन्दी साहित्य में भी वैश्वीकरण के भावों ने सामाजिकता, विचार और संवेदना को केवल भौतिक वस्तुओं में बांधकर रखने का भी कार्य किया है। मधु कांकरिया अपनी कहानी 'लेकिन कामरेड' में रिश्तों के भौतिक आकर्षण को प्रस्तुत करते हुए लिखती है कि "वैश्वीकरण जैसे भाव का उत्स यही तो रिश्ता है विचार और संवेदना के स्तर पर अनंत सामाजिक पर आज के होनहारों ने बांधकर रख दिया है। इस विराट भाव को बस महज आदान-प्रदान से।"[4] इस भौतिकता ने पारिवारिक रिश्तों को भी भौतिक स्तर से जोड दिया है। पहले जहाँ व्यक्ति की भावना, उसकी संवेदना, उसके गुण-अवगुण, उसके हृदय की विशालता को महत्व दिया जाता था । वही आज के समय में भौतिक वस्तुओं को उसके गुण-अवगुण से मापा जाने लगा है। आर्थिक रूप से कौन कितना समृद्ध है और कौन कितना गरीब है ये देखा जाने लगा है । श्रवण कुमार मीणा वैश्वीकरण के संदर्भ में परिवर्तित होते परिवारिक संबंधो के विषय में बताते है कि " संयुक्त परिवारों का विघटन एकाकी परिवारों का विकास, नारी शिक्षा और स्त्रियों का रोजगार की ओर अग्रसर होना, प्रतिष्ठा का प्रश्न बताकर पति और पत्नी का अपनी-अपनी जिद पर अड़ जाना, आदर्श पति का अपनी पत्नी के होते हुए भी किसी तीसरे की ओर झुकाव और यौन सम्बंधों के कारण पारिवारिक विघटन की विषय स्थितियां उत्पन्न हो जाती है।"[5] ये सभी इसी दौर की देन है । जिनसे परिवार परिवर्तित ही नहीं टूटकर समाप्त भी हो रहे है । विवाह के समबन्ध में भी बढ़ते वैश्वीकरण के कारण कई परिवर्तन देखे जा रहे है । सम्माज के साथ ही कई रूपों में साहित्यिक रचनाओं में अविश्वनीय परिवर्तन हुए है। भारतीय विवाह संस्कारों में विवाह के दौरान जहाँ बारात और बारातियों को कन्या पक्ष के परिवार वालों से सम्मान एवं उपहार प्राप्त होते है तथा बदले में कन्या पक्ष वाले केवल आदर मान की अपेक्षा बारातियों से करते है। विवाह की यह परम्परा आजकल बहुत अधिक ढंग तक परिवर्तित हो चुकी है । आजकल मनोरंजन के नाम पर केवल भद्दी टिप्पणियाँ तथा नशाखोरी ही रह गई है । जो विवाह जैसी पवित्र परम्परा के कार्यों को ह्रास की ओर ले जा रही है। मालती जोशी की कहानी 'निर्वासित कर दी तुमने मेरी प्रीत' इस तथ्य को भली प्रकार से प्रस्तुत करती है। "सब लोग खासकर लड़के नशे

में धुत थे। वे लोग अश्लील गाने गा रहे थे। भद्दी फब्तियां कस रहे थे। वे लोग कोल्डड्रिंक से होली खेल रहे ये गिलासों को फुटबॉल की तरह लुढका रहे थे एक-दो वेटरो के साथ तो झुमा–झपटी भी हो गई। सजे – संवरे पंडाल का उन्होंने पल-भर में नक्शा बदल दिया।"[6] बढ़ती उम्र के चलते विवाह संस्कार पर भी आज का कथा साहित्य अपने विचार रखता है। बढ़ती उम्र में विवाह करना अथवा दूसरा विवाह करना यह को बुराई नहीं है परंतु विवाह यदि अपने से कई वर्ष छोटी और कुवांरी कन्या से किया जाए तो यह आपत्तिजनक हो जाता है। यदि आपत्ति प्रो० हरिशंकर आदेश की कहानी 'रक्त सिंदूर' में अपने पिता के विवाह करने पर उल्लास उठाते हुए अपने विचार रखते हुए कहता है कि "यदि पिता जी को विवाह ही करना है तो किसी विधवा से क्यों नहीं करते? क्यों नहीं किसी ऐसी अनाथ वनिता को आश्रय देते, जिसे नियती में समाज की अनीतियों और कुप्रवृतियों का शिकार होने के लिए अकेला और असहाय छोड़ दिया है।"[7] उल्लास इस कुप्रथा पर अपनी आवाज बुलंद तरीके से रखता है। इनकी कहानी 'आधी सदी के बाद भी' कहानी में विधवा विवाह पर विचार किया गया है कि सुप्रिया बहुत कम उम्र में विधवा हो जाती है। उसका पति मुंबई में आतंकवादी हमले में मारा जाता है। उसके बाद सुप्रिया अपने पिता के घर आ जाती है जहां पहले विधवा विवाह अपराध के रूप में देखा जाता था वही अब वैश्वीकरण के आदान-प्रदान से यह एक कर्तव्य माना जाने लगा है। "सुप्रिया के ससुर जी सुप्रिया के पिता से आकर मिलते हैं और कहते हैं मेरे बेटे की मृत्यु के बाद अब सुप्रिया मेरी धर्म बेटी के समान है। मैं उसकी जिंदगी व्यर्थ के कांटों पर नहीं देख सकता। अपने जीते जी बहू को बेटी बनाकर सुरक्षित हाथों में सौंप दूं तो मेरे प्राण सरलता से निकाल पाएंगे।"[8] इस प्रकार विवाह सम्बंधी परम्पराओं में भी सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के परिवर्तन देखे गए है जिनमें सकारात्मक विचारों के दृढ़ता से अपनाने को आवश्यकता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के दौर में हिंदी कहानियों में पारिवारिक रिश्तों का स्वरूप बहुत हद तक बदलता हुआ दिखाई देता है। पहले जहाँ संयुक्त परिवारों में आपसी संबंधों में गहराई होती थी, वहीं अब व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बढ़ते चलन से तथा निजी इच्छाओं और भौतिकवादी जीवनशैली के कारण परिवारों में बिखराव और दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। आदर्श मूल्य घट रहे हैं तथा शिक्षा का प्रभाव भी केवल भौतिक सुख-सुविधाओं तक सीमित होता जा रहा है। नयी सदी की हिंदी कहानियों में इन परिवर्तनों को प्रमुखता से उभारा गया है। कहानियों में पात्रों के बीच पीढ़ियों का संघर्ष, जीवनशैली में आए अंतर, मूल्यों की टकराहट और आधुनिकता की ओर तेजी से बढ़ते कदम स्पष्ट रूप उभारे गये हैं। माता-पिता और बच्चों के बीच संवादहीनता, अकेलापन, और बदलते समय के साथ रिश्तों में आने वाली कड़वाहट भी इन कहानियों का हिस्सा बनी है। जिससे समाज और परिवार तथा ह्रास होती परम्पराओं को बचाने का प्रयास किया गया है।

इस दौर के हिंदी साहित्य में वैश्वीकरण ने जहां एक ओर लोगों को नए अवसर और चुनौतियाँ दी हैं, वहीं पारिवारिक रिश्तों में अस्थिरता और दूरी भी उत्पन्न की है। इसके बावजूद, कुछ कहानियाँ यह भी दर्शाती हैं कि आपसी समझ, भावनात्मक जुड़ाव और परिवार के प्रति प्रेम इन चुनौतियों को पार कर सकते हैं। यानि, परिवार का बदलता रूप केवल नकारात्मक नहीं है, बल्कि वह नई परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास भी कर रहा है और समाज को बेहतर बनाने के लिए वैश्वीकरण के परिवर्तित होते दौर में परिवार के साथ सकारात्मक सामंजस्य स्थापित कर सकने के लिए पारिवारिक रिश्तों को अवगत कराते हुए उन्हें परिवार को बांधे रखने और उसमें भौतिकता को गौव तथा पारिवारिक प्रेम को प्रमुखता से रखने की सीख भी दे रहा है।

[1] अमित कुमार सिंह, भूमंडलीकरण और भारत: परिदृश्य और विकल्प, पृष्ठ 83 सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली 2014

[2] विपाशा जनवरी-जून पृ.137, भाषा एवं संस्कृति विभाग, हि.प्र. शिमला - जनवरी 2010.

[3] क्षमा शर्मा, 'नेम प्लेट', राजकमल प्रकाशन प्रा. लि. पृ 11 सं.2010

[4] मधु कांकरिया, 'बीतते हुए', राजकमल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड , दरियागंज नई दिल्ली पृ. 25 द्वि.स० 2017

[5] डॉ श्रवण कुमार मीणा, हिन्दी उपन्यास संबंधो के विविध आयाम, पृ 48, श्री इंटरप्राइजेज प्रकाशन एवं विर्तक सं.2011

[6] मालती जोशी, 'औरत एक रात है ' परमेश्वरी प्रकाशन,पृ. 16, सं 2020

[7] प्रो. हरिशंकर आदेश,'निशा की बाहें ' , पृ82, संजय प्रकाशन,नयी दिल्ली,सं. 2006

[8] प्रभा पांडे पुरनम, मन के दिए पृ. 24 पुरनम प्रकाशन, जबलपुर मध्य प्रदेश 2009